सकारात्मक सोच सूरज का शौर्य और पुष्प की सुगन्ध है।

भूमण्डलीयकरण के वर्तमान दौर में हर काबिल आदमी को खुली आंखों से सपने देखना और इन सपनों को मूर्तरूप देने का का अधिकार है । पुरानी कटुताये और कड़वी यादों को भूलकर योग्यतानुसार ईमानदारी के साथ कमर कसकर आगे बढना सफलता का परिचायक है परन्तु याद रखने वाली बात यह है कि सफलता हासिल करने के लिये रूढिगत् श्रेष्ठताओं को पास फअकने नही देना चाहिये । इस श्रेष्ठता की आंच योग्यता को झुलसा देती है । आदमी होकर भी हक से वंचित हो जाता है । सफलता तो हर विवेकशील व्यक्ति का सपना होता है परन्तु इस सपने के लिये गलत रास्तों का प्रयोग उचित नही ।आज भी हमारा देश इस अवसाद से ग्रस्त है। यदि व्यक्ति काबिलियत है, भले ही उसे जानबूझकर ढकेला जाता रहा है। वक्त के साथ सफलता काबिलियत का अनुसरण जरूर करेगी । व्यक्ति काबिल है,उसकी काबिलियत को नजरअंदाज किया गया है, इस घृणित कृत्य से काबिल व्यक्ति की योग्यता में और अधिक निखार आता है । यह बात सही है कि उसे अपनी काबिलियत को दिखाने के लिये आंसू तक से रोटी गीली करनी पड जाती है । निराशा के बादल नही छंटते हैं, परन्तु इस निराश को सम्भावना में बदल दिया जाये तो असफल व्यक्ति भी सफलता के शिखर पर महसूस करता है ।यह सफलता भले ही धन का पहाड़ खड़ा करने की न होकर मान–सम्मान की हो सकती है।यह मान–सम्मान धन के ढेर से खरीदी भी नही जा सकता। याद रहे जो व्यक्ति सम्मानित है सही मायने में वही सफल है। ऐसे सफल व्यक्तियों की राह में कांटा बने लोग सिर पर बिठाने को आतुर नजर आते है। अपनी गलतियों के लिये खुद की नजरों में गिरे हुए लगते है । यह कथन अटपटा लगता हो परन्तु सच्चाई है। हां दृढसंकल्पित रहकर अपने मकसद से पीछे नही हटना चाहिये बशर्ते मकसद नेक हो लोकहित में हो। कहते है ना घुरे के दिन भी फिरते है। काबिलयत को कब तक दबाया जा सकता है । काबिलियत भी वैसे ही है जैसे पानी और साधु इनको कोई रोक नही पाया है। काबिलियत भी प्रकाशपुंज छोड़ती रहती है और एक दिन सफलता के शिखर पर होती है । नजरअंदाज ही नही पीछे ढकेलने वाले लोग भी प्रतिभा के कायल हो जाते है । काबिलियत का यह भी एक बडा गुण है कि वह अतीत की कड़वी यादें को अपने उपर हावी नही होने देती है । इसका ज्वलन्त उदाहरण आज के दौर की फिल्म थ्री इडिएट भी तो है ।

काबिलियत गंगाजल है,काबिलियत नेक मन्तव्य के आगे निकल सकती है पर संयम,साहस और संकल्प पर अडिग बने रहने की जरूरत है । काबिलियत से उत्सर्जित उर्जा से जिस राह चल पर चल दिये बढते जाना है । रूकना नही है । तरक्की घूम–फिरकर पीछे पीछे आयेगी जो किसी व्यवधान की वजह से राह बदल चुकी थी। काबिलियत का फलिभूत अवश्य होगा परन्तु कर्म करते रहने की जरूरत है ।

इस दौरान कई मानव निर्मित मुश्किले भी आती है । थाली की रोटी छिनने का भय भी सामने होता है पर दृढ संकल्प के आगे कोई नही टिकता है। प्रहलाद भी हमारे लिये उदाहरण हो सकता है । वह भी दृढसंकल्पित था,उसमें काबिलियत थी परमात्मा को प्रगट होना पड़ा । कहावत भी तो है अच्छी राह पर चलोगे तो व्यवधान भी बहुत आयेगे । नेकी की राह पर तकलीफ भी बहुत आती है,फूल की जगह शूल मिलते है । कभी कभी तो अपने भी पराये हो जाते है परन्तु दृढसंकल्पित व्यक्ति के आगे घुटने टेकने ही पड़ते है । ऐसा संकल्प वही ले सकता है जो काबिलियत से भरा–पूरा होगा । वह व्यक्ति अर्थ की तुला पर भले ही व्यर्थ लगे पर वह मान–सम्मान की तुल पर श्रेष्ठ होता है । वक्त ऐसे लोगो को याद रखता है न कि छल–बल से धन का पहाड़ जोड़े लोगो । मैं यह नही कहता हूं कि धन की आवश्यकता काबिल लोगों को नही होती है । होती है,उन्हे भी रोटी की जरूरत होती है,मां–बाप घर–परिवार चलना होता है पर वे तंग हाथों से भी ऐसी मीनार खड़ा कर देते है कि रूपयें के ढेर पर खड़ा व्यक्ति उनके आगे बौना नजर आाता है । काबिलियत का सोधापन ही ऐसा है । ऐसे लोग धन अथवा तरक्की के पीछे नही भागते तरक्की उनके पीछे आती है । भगवान बुघ्द राजा के बेटे थे बहुत धन था, उस युग में कितने राजा थे कौन याद है पर बुद्ध का संकल्प सबसे हटकर था मानव कल्याण और समानता के लिये राजपाट तक का त्याग कर दिये। दुनिया उन्हे भगवान कहती है। उनके सामने भी बहुत व्यवधान आये अथवा खड़े किये गये । वे कड़वी यादें को बिसारते रहे अन्ततः जगत के लिये अराध्य बन गये क्योंकि वे दृढसंकल्पित थे ।

सचमुच व्यक्ति को सफल होना है तो उसे अतीत की कड़वाहटों को जाति–धर्म की बुराईयों को त्याग कर अपने मानव कल्याण के संकल्प पर चलना हो । देश के हितार्थ राह चुनना होगा । इस राह में सफलता देर से मिलने की सम्भावना है पर इस सफलता का मुकाबला दुनिया की दौलत नही कर सकती । मानवीय भावनाये अनन्त है ना कभी समाप्त हुई है ना होगी । हां परिस्थितियां बदल जाती है कुछ नई भी निर्मित हो जाती है । परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अतीत की कड़वाहटों का भूलाकर खुद को मजबूत बनाना होगा तभी सफल हो सकते है । एक बड़ी पुरानी कहावत है जो पत्थर हथौड़े की मार से विचलित होता है कभी भी अच्छी मर्ति के रूप में नही ढल सकता है । एक और कहावत हमारे गांवों में कही जाती है जो खेत हल चलने से दुखी होता है वह बंजर रहता है उसमें अन्न नही पैदा हो सकता । काबिल व्यक्ति ऐसा नही हो सकता वह वर्तमान का लाभ उठाना बेहतर समझता है जनहित में देशहित में तभी तो उसे दुनिया याद रखती है ।

मैने कुछ व्यक्तियों के अस्तित्व के बारे जानने का प्रयास किया तो पाया कि उनमें काबिलियत तो बहुत है पर उन्हे अपनी काबिलियत साबित करने के मौके ही नही मिले या मौके आने से पहले ही छिन लिये गये किसी न किसी कड़वाहट के विषबीज की वजह से । ये काबिल लोग पद और दौलत के लाभ की दृष्टि से असफल कहे जाते रहे परन्तु ये लोग अपनी काबिलियत का लोहा मनवाने में कई कदम आगे साबित हुए उन लोगों से जो अयोग्य होकर भी पद और दौलत के लाभ की दृष्टि से सै गुना लाभ अर्जित कर चुके थे । देखने में तो यहां तक आया कि बड़े ओहदेदार अपने से नीचे काम कर रहे काबिल व्यक्ति के आगे खुद की निगाहें में बौने नजर आये । कुछ तो काबिल आदमी के सामने यहां तक कबूल कर लिये कि तुम्हारे सामने हम तो कहीं के नही लगते । क्या यह काबिल आदमी की असफलता सफल व्यक्ति से कई गुना बड़ी सफलता नही । काबिल और गैर काबिल व्यक्ति की सफलता और असफलता सामने है । काबिल असफल व्यक्ति कई गुना अधिक सफल साबित होता है । हां पद और दौलत की दृष्टि से भले ही लाभ नही हुआ हो परन्तु मान–सम्मान और यश उसे अधिक मिलता है ।यही मान सम्मान व्यक्ति की काबिलियत का द्योतक है । धन का ढेर खड़ा कर लेने से आदमी सम्मानित नही हो जाता ।

यदि हम अपने अस्तित्व बोर में जानने की कोशि करे तो उभर कर आयेगा कि संभावनाओं को यौवन देना ही काबिल व्यक्ति के अस्तित्व के मायने होते है । जिस तरह सूरज निरन्तर रोशनी और फूल सुगन्ध देता रहता है ठीक वैसा ही काबिल व्यक्ति होता है । पद मिले या ना मिले वह अपना काम सूरज और फूल की तरह करता रहता है । एक कहावत है किसी ने कंफूशियस से पूछा कि यह कैसे मालूम हो सकता है कि भीतर से कौन महान है और कौन कमजोर । कंफूशियस बोले महान व्यक्ति जो चाहते है खुद प्राप्त कर लेते है परन्तु कमजोर व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर होता है । ऐसा एक काबिल व्यक्ति ही करके दिखा सकता है । सफलता के पीछे भागने की जरूरत नही है, हमें काबिल बनने की जरूरत है । यदि हम काबिल बनेगे तो सफलता पीछे –पीछे चलेगी ।

सफलता की सार्थकता तभी है जब हम अपनी उम्मीदों,आशाओ पर गहन चिन्तन करे,दूसरों की उम्मीदो पर खरा उतरे, सफलता के अभिमान से दूसरे को आंसू न दे । जहां तक हो सके सम्भावनाओ के बीज बोये । इन सम्भावनाओं से कार्यक्षमता बढेगी और इनसे उपजा प्रतिफल काबिलियत की राह में मील का पत्थर साबित होगा । मुद्दे की बात तो ये है कि काबिलियत हासिल करने के लिये, यश–प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये पुरूषार्थ दृढसंकल्प और परोपकार की भावना का विकासित करना होगा, तभी व्यक्ति सफल कहा जा सकता है । काबिल आदमी इन सब गुणों की खान होता है तभी तो सफलता उसके पीछे–पीछे चलती है ।यह सब कुछ हासिल हो सकता है सकारात्मक सोच से । नकारात्मक विचार काम ही नही बिगाड़ते बल्कि व्यक्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाते है । सच सकारात्मक सोच सूरज का शौर्य और पुष्प की सुगन्ध होती है,जिससे व्यक्ति की काबिलियत अमिट इतिहास रच जाती है ।यही इतिहास काबिल व्यक्ति का नाम काल के गाल पर अंकित कर जाता है । वर्तमान दौर में तरक्की की अंधी दौड़ में भागने से बेहतर होगा कि काबिलियत हासिल की जाये। यकीनन काबिल होगे तो कामयाबी जरूर मिलेगी ।